लौकिक अर्थ के लिए चेष्टा न की जाय। सब कर्मों को वैकुण्ठ-जगत् में श्रीभगवान् के पास वापस लौटने के उद्देश्य से ही करना चाहिए। यही जीवन का परम लाभ है।

सद्भावे साधुभावे च सदित्येतत्प्रयुज्यते।
प्रशस्ते कर्मणि तथा सच्छब्दः पार्थ युज्यते।।२६।।
यज्ञे तपसि दाने च स्थितिः सदिति चोच्यते।
कर्म चैव तदर्थीयं सदित्येवाभिधीयते।।२७।।

सद्भावे=परब्रह्म के नाम के रूप में; **साधुभावे**=भक्तियोग के अर्थ में; **च**=भी; **सत्**=सत्; **इति**=ऐसे; **एतत्**=यह; **प्रयुज्यतेः**=प्रयोग होता है; **प्रशस्ते**=अधिकृत; **कर्मणि**=कर्म में; **तथा**=और; **सत्**=सत्; **शब्दः**=शब्द; **पार्थ**=हे अर्जुन; **युज्यते**=प्रयोग में आता है; **यज्ञे**=यज्ञ में; **तपसि**=तप में; **दाने**=दान में; **च**=भी; **स्थितिः**=स्थिति है (जो); **सत्**=सत्; **इति**=ऐसे; **च**=तथा; **उच्यते**=कही जाती है; **कर्म**=कर्म; **च**=भी; **एव**=निःसन्देह; **तत् अर्थीयम्**=उसके लिए किया; **सत्**=सत्; **इति**=इस प्रकार; **एव**=ही; **अभिधीयते**=अभ्यास किया जाता है।

अनुवाद

हे अर्जुन! परब्रह्म भक्तियोगरूप यज्ञ के लक्ष्य हैं और 'सत्' शब्द से उन्हीं का निर्देश है। ये सत्स्वरूप यज्ञ, तप और दान पुरुषोत्तम श्रीभगवान् की प्रसन्नता के लिए ही किए जाते हैं।।२६-२७।।

तात्पर्य

प्रशस्ते कर्मणि शब्द कर्तव्यकर्मों का वाचक है। वैदिक शास्त्रें में अनेक ऐसे कर्मों का विधान है, जो आजन्म आत्मशुद्धि के लिए किए जाते हैं। इनका उद्देश्य अन्त में जीव को मुक्तिलाभ कराना है। ये सब कर्म **ॐ तत् सत्** के उच्चारण के साथ करने चाहिए। **सद्भावे**, **साधुभावे**—शुद्ध सत्त्वमयी दिव्य अवस्था के वाचक हैं। कृष्णभावनाभावित कर्म करने वाला सत्त्व में स्थित है तथा कृष्णभावनाभावित कर्म के तत्त्व को पूर्ण रूप से जानने वाला स्वरूप-प्राप्त है। श्रीमद्भागवत में कहा गया है कि भक्तजनों के संग में भगवत्कथा की प्राप्ति होती है। वस्तुतः, सत्संग के बिना दिव्य ज्ञान नहीं हो सकता। दीक्षा अथवा यज्ञोपवीत में भी **ॐ तत् सत्**—ऐसे उच्चारण किया जाता है। इसी प्रकार, सम्पूर्ण यज्ञों में परम लक्ष्य—**ॐ तत् सत्** का आह्वान करते हैं। **ॐ तत् सत्** के उच्चारण से सब क्रियाएँ सिद्ध हो जाती हैं। अस्तु परमस्वरूप **ॐ तत् सत्** सब प्रकार से पूर्णता प्रदान करता है।

अश्रद्धया हुतं दत्तं तपस्तप्तं कृतं च यत्।
असदित्युच्यते पार्थ न च तत्प्रेत्य नो इह।।२८।।

अश्रद्धया=श्रद्धा के बिना; **हुतम्**=हवन; **दत्तम्**=दान; **तपः**=तप; **तप्तम्**=तपा गया; **कृतम्**=किया; **च**=तथा; **यत्**=जो भी कर्म; **असत्**=असत्; **इति**=ऐसे; **उच्यते**=कहा